Vol 4 Issue 11 Dec 2014

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 2.1506(UIF)
Volume-4 | Issue-11 | Dec-2014
Available online at www.isrj.org

रामचरितमानस की प्रासंगिकता

पूनम देवी

सारांश :रामचरितमानस के बालकाण्ड से उत्तरकाण्ड तक विविध स्थलों पर तुलसीदास आध्यात्मिकता के बारे में प्रसंगानुसार वर्णन करते हैं। बालकाण्ड के मंगलाचरण के दूसरे श्लोक में माँ भवानी और शिवजी की वंदना करके इस अध्यात्मवाद की ओर संकेत कर देती हैं। जो परमात्मा को पहचानने में भी सहायक होते हैं। जैसे –

भवानीशंङ्करौ वन्द श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम्।।

प्रस्तावना :–

अर्थात् श्रद्धा और विश्वास के स्वरूप श्री पार्वती जी और श्री शंकरजी की मैं वंदना करता हूँ जिनके बिना सिद्धजन अपने अंतःकरण में स्थित ईश्वर को नहीं देख सकते।

यहाँ तुलसीदासजी आत्मा से परमात्मा वाले संदर्भ द्वारा आध्यात्मिक संबंध के बारे में बताते हैं, प्रत्येक सिद्ध पुरुष के लिए मुख्य लक्ष्य होता है परमात्मा के स्वरूप को पहचानना वही आध्यात्मिक विद्या हुई। अपने आत्मज्ञान द्वारा ब्रह्म स्वरूप को जानना।

इस प्रकार तुलसीदास मंगलाचरण से ही रामचरितमानस में अध्यात्म विद्या के बारे में संकेत कर देते हैं। इसमें जीव, जगत, ब्रह्म और ईश्वर आदि को लेकर जो चर्चा करते हैं, उसमें किसी न किसी रूप में अध्यात्म तत्व के बारे में वर्णन मिलता है।

संपूर्ण रामचरितमानस में बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड और उत्तरकाण्ड में आध्यात्मिक तत्व को लेकर तुलसीदास जी विस्तृत वर्णन करते हैं। बालकाण्ड के प्रारंभ से ही तुलसीदास संपूर्ण जगत को 'सियाराममय' बताकर प्रत्येक जीव (आत्मा) का चौरासी लाख योनि के भ्रमण की बात को बताते हैं।

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ वासी।
सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।। (रा.च.मा.1/5/2)

यहाँ जीव के तीन प्रकार की बात हैं – 1. जलचर, 2. स्थलचर और 3. नभचर – क्रमशः जल, स्थल और नभ में रहने वाले तीनों प्रकारों में मिलाकर कुल चौरासी लाख प्रकार के जीव होते हैं। हमारे यहाँ ऐसी मान्यता है कि चौरासी लाख योनि के भ्रमण के बाद मानव जन्म मिलता है। इसीलिए यह देह मिलना दुर्लभ बताया है–

बड़े भाग मानुष तनु पावा। (रा.च.मा. 7/83/8)

संतों ने भी इस मानव देह की दुलर्भता की गंभीरता समझकर अपने जन्म को सार्थक करने के लिए प्रभु–भक्ति को श्रेष्ठ बताया है।

तुलसीदास जी बालकाण्ड में आध्यात्मिक तत्व की भी विस्तृत चर्चा शिव–पार्वती संवाद द्वारा करते हैं। पार्वती के पहले प्रश्न प्रत्युत्तर शिवजी देते हैं। यह पूरा संवाद आध्यात्मिक संवाद बन जाता है।

पार्वती का प्रश्न

अति आरति पूछउँ सुरराया। रघुपति कथा कहहु करि दाया।।
प्रथम सौं कारन कहहु विचारी। निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी।।(रा.च.मा.1/110/2)

अर्थात् निर्गुण ब्रह्म सगुण रूप कब धारण करता है?

शिवाजी का प्रत्युत्तर

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।।
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।
जो गुन रहित सगुन सोई कैसे। जलु हिम उपल विभग नहिं जैसे।।
सहज प्रकास रूप भगवाना। नहि तहँ पुनि बिग्यान बिहाना।।
हरष विषाद ग्यान अग्याना। परमानंद परेस पुराना।।(रा.च.मा. 1/116/2–8)

यहाँ तुलसीदास जी शिवजी द्वारा बतातें हैं कि सगुण और निर्गुण ब्रह्म में कोई भेद नहीं। निर्गुण ब्रह्म ही भक्त के प्रेमवास सगुण (श्रीराम या श्री कृष्ण) का रूप लेकर पृथ्वी पर अवतार लेते हैं। जैसे जल के दो रूप हैं – एक जल और दूसरा हिम दोनों अलग नहीं परंतु एक प्रवाही है दूसरा घन। वैसे ही ब्रह्म के दो रूप निर्गुण (निराकार) और सगुण (साकार) है।

तुलसीदास जी शिवजी के द्वारा भगवान श्रीराम के अवतार की महिमा बताते हैं–

जगत प्रकास्य प्रकासक राम। मायाधीस ग्यान गुन धामू।।
जासु सत्यता तें जड माया। भास सत्य रूप मोह सहाया।।(रा.च.मा. 1/111/2–3)

यहाँ तुलसी 'ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या' वाले की शंकराचार्यजी के सिद्धान्त को अलग संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं : श्रीराम इस जगत को प्रकाशित करने वाले तेज पुंज है और माया के अधिपति श्रीराम ज्ञान गुण के धाम हैं। उनकी मोह माया में आकर हमें जड माया भी सत्य दिखाई पड़ती है और अधिक सीख देते हुए तुलसीदास जी बताते हैं कि भव–सागर को पार करना है तो परमात्मा श्रीराम के आश्रय में जाये बिना यह संभव नहीं है। जैसे – शिवजी पार्वती से कहते हैं–

सादर सुमिरन जें नर करहीं। भव बारिधि गोपद इव तरही।।
राम सो परमात्मा भवानी। तहँ भ्रम अति अबिहित तव बानी।।(रा.च.मा. 1/111/2–2)

अरण्यकाण्ड में प्रभु श्रीराम का सीता और लक्ष्मण सहित का वन पथ में आगे बढ़ना भी कैसा प्रतीत होता है उस दृश्य द्वारा भी तुलसीदास जी ब्रह्म जीव और माया के संपर्क द्वारा बताते हैं कि दोनों भाई राम और लक्ष्मण क्रमशः ब्रह्म और जीव है और उन दोनों के बीच में सीता माया–सी शोभा देती हैं'

आगे राम अनुजपुनि पाछे। मुनि बर बेष बने अति काछें।।
उभय बीच श्री सोहइ कैसी। ब्रह्म जीव बिच माया जैसी।।(रा.च.मा. 3/6/1–2)

यहाँ तुलसीदास जी 'श्री सोहइ कैसी' द्वारा सीता और लक्ष्मी दोनों की ओर संकेत करते हैं। श्रीराम भगवान विष्णु के अवतार सीता लक्ष्मी का।

अरण्यकाण्ड में प्रभु श्रीराम–शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश देते हैं। उसमें भी तुलसीदास मनुष्य की आध्यात्मिक विकास–यात्रा का ही विस्तृत वर्णन करते हैं – 'प्रथम भगति संतन्ह कर संगा' से लेकर नवम् भक्ति तक उसका उल्लेख करके भक्त के आत्मज्ञान रूप सहज स्वरूप का वर्णन किया गया है–

नव महुँ एकउ जिन्ह कैं होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।।
सोई अतिसय प्रियभामिनि मोरे। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरे।।
जोगि वृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भरु सोई।।
मम दरसन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज सरूपा।।(रा.च.मा. 3/37/3–4)

प्रभु श्रीराम शबरी से कहते हैं कि नवधा भक्ति में से किसी एक को भी अपनाने वाला मुझे प्रिय लगता हो। परंतु तुझमें तो नौ में से सभी प्रकार की भक्ति दृढ़ हो गई, इसीलिए तुम अतिशय प्रिय है। जो गति मुनियों को भी दुर्लभ है वह गति तुझे प्राप्त हो गई है, क्योंकि मेरे दर्शन का फल परम अनुपम है जिसके कारण पामर जीव भी अपना सहज स्वरूप (आत्मज्ञान) प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

श्रीराम द्वारा किया गया उपदेश प्रत्येक मानव के लिए भी आध्यात्मिक स्थिति सुधारने में उपयोगी हो सकता है। यहाँ तुलसीदास जी भक्त के आदर्श जीवन द्वारा भोगपरक जीवन की अपेक्षा सदाचारी और बैरागी तथा भक्तिमय जीवन का बोध भी दे देते हैं। ऐसा जीवन समाज में बहुत उपयोगी और प्रेरणारूप हो सकता है। इस दृष्टि के संदर्भ में तुलसी साहित्य की प्रासंगिकता आज के समय में और भी बढ़ जाती है।

किष्किन्धाकाण्ड में बाली–पत्नी तारा अपने पति की मृत्यु से दुःखी होकर विलाप करती है तब प्रभु श्रीराम ज्ञान से माया का आवरण हटाकर भक्ति में प्रवृत्त करते हैं–

तारा बिकल देखि रघुराया। दीन्ह ग्यान हरि लीन्हीं माया।।
छिति जल पावक गगन समीरा। पंच रचित यह अधम सरीरा।।
प्रगट सो तनु तव आगे सोवा। जीव नित्य केहि भगि तुम्ह रोवा।।
उपजा ग्यान चरन तब लागी। लीन्हेसि परम भगति बर मांगी।।(रा.च.मा. 5/11/2–3)

इस प्रसंग द्वारा तुलसीदास जी सांसारिक मनुष्य को बहुत कुछ बोध दे जाते हैं। यहाँ क्षणभंगुर शरीर की नाशवंता और अजर–अमर आत्मा (जीव) की शाश्वता का उल्लेख भी मिल जाता है। हमारा शरीर पंच महाभूत तत्वों से बना है – पृथ्वी, पानी, अग्नि, आकाश और पवन (छिति जल पावक गगन समीरा)। इस देह का मूल्य आत्मा (जीव) तत्व के रहने तक ही अधिक है। परंतु हम अज्ञानी मनुष्य बाली–पत्नी (तारा) की तरह अधम शरीर का ही मोह रखकर उसके नाश होने पर दुःखी होते हैं। श्रीराम इसीलिए कहते हैं – आत्मा (जीव) तो नित्य है, उनका शोक करना निरर्थक है। शरीर क्षणभंगुर है इसीलिए ऐसी वस्तु का शोक करना अनावश्यक है और वह तो अब भी तेरे आगे सोया हुआ पड़ा है, फिर दुःखी क्यों? इस प्रकार तारा को ज्ञान हो गया और भक्ति का वरदान माँगकर धन्य हो गई। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं–

नित्यः सर्वगतः स्थाणुचरलो•यं सनातनः।
यह आत्मा नित्य सर्वव्यापी, अचल, स्थिर रहने वाला और सनातन है।
किष्किन्धाकाण्ड में तुलसीदास शरदऋतु के वर्णन द्वारा भी ब्रह्म की स्थिति का सुंदर उदाहरण देते हैं–
सुखी मीन जे नीर अगाधा। निमि हरि सरन न एकउ बाधा।
फूलें कमल सोरू सर कैसा। निर्गुन ब्रह्म सगुन भए जैसा।।(रा.च.मा. 5/16/1)

यहाँ अगाध पानी में जैसे मछली सुखी रहती है, उसी प्रकार प्रभु आश्रय में रहने वाले को कोई बाधा नहीं आती। शरद ऋतु में तालाब में कमल कैसे शोभा देते हैं, जैसे निर्गुन ब्रह्म सगुन का रूप लेकर मानौ शोभायमान हो।

तुलसीदास की कल्पना अद्भुत हैं। सगुन ब्रह्म को कमल की उपाधि देकर भारतीय संस्कृति के प्रतीक कमल फूल की महत्ता और अधिक बढ़ा दी है।

उत्तरकाण्ड में तुलसीदास काकभुशुण्डि–गरुढ़ संवाद द्वारा ज्ञान–भक्ति निरूपण में आध्यात्मिक–बोध देते हुए ज्ञान और भक्ति तथा माया विषयक अपना दृष्टिकोण सामने रखते हैं–

ग्यानहिं भगतिहिं अंतर केता। सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता।।
सुनि उरगारि बचन सुख माना। सादर बोले काग सुखाना।।(रा.च.मा. 8/115/5)

गरुण के उपर्युक्त प्रश्न का काकभुशुण्डि उत्तर देते हुए बताते हैं –

माया भगति सुनहु तम्ह दोऊ। नारि वर्ग जानहु सब कोऊ।।
पुनि रघुबीर भगति पिआरी। मायाखलु नर्तकी बिचारी।।
भगतिहि सानुकूल रघुराया। ताते तेहि डरपति अति माया।।
राम भगति निरूपम निरूपाधी। बसहु जासु उर सदा अबाधी।।
तेहि बिलोकि माया सकुचाई। करि न सकहु कुछ निज प्रभुताई।।
उस बिचारि जे मुनि बिसानी। जाचहि भगति सकल सुख खानी।।(रा.च.मा. 8/116/1–5)

अर्थात् माया और भक्ति दोनों स्त्री वर्ग की है। यह सब जानते हैं। श्रीराम को भक्ति प्रिय है, माया तो उनकी नर्तकी समान है। श्री रघुवीर भक्ति के अनुकूल हैं। अतः माया उससे अत्यंत डरती रहती है, जिसके हृदय में उपमारहित और उपाधिरहित रामभक्ति सदा किसी बाधारहित बसती है। उसे देखकर माया सकुचा जाती है। उस पर माया अपनी प्रभुता कुछ भी नहीं कर सकती। ऐसा विचार कर ही जो विज्ञानी मुनि हैं, वे भी सब सुखों की खानि भक्ति की ही याचना करते हैं।

काकभुशुंडि ज्ञान विषयक और जानकारी देते हुए गरुड जी से कहते हैं–

सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनइ न जाई बखानी।।
ईश्वर अंश जीव अविनासी। चेतन अमर सहज सुख रासी।।
सो मायावस भयउ गोसाई। बंध्यो कीर मरकट की नाई।।
जड़ चेतनहि ग्रंथि परिगई। जदपि मृषा छूटत कठिनाई।।

तव ते जीवन भयउ संसारी। छूट न ग्रंथि न होउ सुखारी।।(रा.च.मा. 8/117/1–3)

इस संवाद द्वारा तुलसीदास जी बताते हैं कि हे तात (गरुड) यह न कहने योग्य कहानी बताई न जाकर समझी जाती है। ईश्वर का अंश जीव भी अविनाशी ही है। और चेतना रूप निर्मल सहज सुख की खान है। परंतु मायावस वह (जीव) तोता और बंदर की तरह बंधित हो गया है। जड़–चेतन में ग्रंथि (गाँठ) पड़ गई है। यह छूटती नहीं तब से जीव उससंसार में फँसा, ग्रंथि बढ़ती चली और दुःख भी बढ़ता रहा।

अंत में योगरूपी अग्नि में शुभशुभ कर्मरूपी ईंधन से भस्म करके ममतारूपी मल जल जाय तब ज्ञानरूपी घी को (निश्चयात्मका बुद्धि से) ठंका करें।

आत्मानुभव पर महत्व देते हुए तुलसीदास जी लिखते हैं–
सोऽहमसि इति वृति अखंडा। दीप सिखा सोईपरम प्रचंडा।।
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा। तब भव मूल भेद भ्रम नासा।।(रा.च.मा. 8/117/1)

'सोऽहमस्मि' मैं ब्रह्म हूँ। यह जो अखण्ड (तैल धारा न छूटने वाली) वृत्ति है वही ज्ञानदीपक की परम प्रचण्ड दीपशिखा है। जब आत्मानुभव के सुख का सुंदर प्रकाश फैलता है तब संसार के मूल भेदरूपी भ्रम का नाश हो जाता है।

इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में प्रत्येक काण्ड में किसी–न–किसी प्रसंग द्वारा अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियों का उल्लेख करके अपने निजी अनुभव को भक्ति के रंग में रंगकर हमारे सामने रखा है।

आज के भौतिक एवं यंत्रवादी युग में आध्यात्मिक साहित्य का अध्ययन हमें चित्त की शांति और सात्विक आनंद प्राप्ति में सहायता करता है। इस दृष्टि से मध्यकालीन साहित्य की आज भी प्रासंगिकता उतनी ही है, जितनी उस समय थी। उसमें मानव–जीवन के आत्मिक आवाज की पुकार पायी जाती है।

सन्दर्भ सूची

1.रामचरितमानस – तुलसीदास
2.गोस्वामी तुलसीदास – डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय
3.तुलसी का मानस – डॉ. मुन्शीराम शर्मा

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org